शब्द संख्या–2547

# साउथ एशियन डॉयलॉग ऑन इकोलॉजिकल डेमोक्रेसी (सेडेड)

(पारिस्थितिकीय लोकतंत्र पर दक्षिण एशियाई संवाद/सेडेड)

## हरित स्वराज संवाद

# एक परिचय

पारिस्थितिक स्वराज (इकोलॉजिकल स्वराज) कायम करने के लिए आम जन, विभिन्न सामाजिक संगठनों तथा नेटवर्कों के बीच में एक विचार विकसित करना तथा सामूहिक और सहयोगी कामों को समर्थन देने तथा बढ़ावा देने के उपाय करना

## सेडेड क्या है ? (सेडेड एक परिचय)

वसुधैव कुटुम्बकम, सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डिवेलपिंग सोशाइटीज (सीएसडीएस), तथा लोकायन–भारत, केपा तथा फिनलैंड स्थित सेमेनप्पू फॉउन्डेशन के साथ मिलकर काम करते हुए साउथ एश्यिन डॉयलॉग ऑन इकोलॉजिकल डिमोक्रेसी (सेडेड) की स्थापना 2002 में हुई। हालांकि सेडेड का व्यावहारिक काम कई संगठनों तथा लोगों के व्यक्तिगत सहयोग का नतीजा है, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से एक ऐसा नेटवर्क बनाया जिसका कोई उपरिकेन्द्र नहीं था।

सेडेड प्राकृतिक संसाधनों पर लोकतांत्रिक नियंत्रण की बात स्वीकारते हुए उसका विस्तार करने के बारे में सोचता है साथ ही वो लोकतंत्र को मजबूत बनाने तथा मानवजाति के कल्याण के बारे में सोचता है। इस संबंध में जोहान्सिबर्ग में (2002) सतत् विकास के संबंध में हुए विश्व सम्मेलन ने पारिस्थितिकीय स्थिरता तथा संपूर्ण मानवजाति के न्यायसंगत विकास के बारे में सोचने वाले सभी लोगों को निराश किया। आज आधुनिक विज्ञान, सामाजिक–आर्थिक प्रक्रियाएं तथा नीतियां का झुकाव खंडित जीवन, मुद्दों की ओर या लोगों की सोच भी उसी ओर झुकी हुई महसूस होती है।

आज लोकतंत्र का अर्थ केवल राजनैतिक ढांचे का प्रतिनिधित्व करना रह गया है। इसके बावजूद पिछले 200–500 सालों में संस्थानीकरण पर जोर दिया जा रहा है जिसका अंत वर्तमान में मौजूद एकाधिकार की प्रक्रियाओं, अधिपत्य तथा वैश्वीकरण के प्रभुत्व को मानवीयता से कम करने के रूप में होगा; लोकतंत्र का एक अन्य परिप्रेक्ष्य भी है जो अभी भी बौद्धिक तथा सहज रूप से समर्थन करता है। ये समानता, परस्परता तथा व्यक्गित विचारों–परिवार के सदस्यों, समुदायों, मनुष्यों, बाकी प्रकृति, लिंगों, समाजों, राष्ट्र–राज्यों तथा देश भर की जनता के बीच पारस्परिक विचारों के सम्मान पर आधारित बनाए जाने वाले संबंधों का विचार है।

कोई भी संगठन जीवन की भिन्न सामाजिक दशाओं के किसी भी मोड़ पर लोकतांत्रिक मूल्यों का एहसास दिलाने वाले भिन्न हस्तक्षेपों (हितों) की आवश्यकता को पूरा करने की इच्छा नहीं कर सकता है। आज हमें एक ऐसे समान ढ़ांचे की आवश्यकता नहीं है जो भिन्न रूपों को एकसमान कर दे बल्कि एक ऐसे रास्ते की आवश्यकता है जो एक–दूसरे से जुड़ा हो; हम एक–दूसरे के लिए नहीं बल्कि 'अपने' लिये प्रयास करें और हमारे बीच आपसी मतभेद होने के बावजूद भी हम एक–दूसरे के लोकतांत्रिक हस्तक्षेपों का पोषण करें। आज एक ऐसे स्थान की आवश्यकता है जो लोकतंत्र के संबंध में आई चिंताओं तथा विचारों को मजबूत बनाए तथा भिन्न हस्तक्षेपों (हितों) को एक ही मंच प्रदान करे; एक ऐसा फोरम जहां भिन्न पृष्ठभूमि के लोग अपने संगठनों या संस्थानों की पहचान को आपस में मिलाए बिना यहां आएं और अपने काम के बारे में आपस में बात करें तथा नए गठबंधन बनाएं। सेडेड, हमारे समकक्ष एक चुनौती पेश करता है जैसे कि इस परिप्रेक्ष्य के चारों और राजनीति का निर्माण करना, तथा लोकतंत्र के विस्तार और उसकी मजबूती की राह में सभी संस्थानों को आपस में जोड़ना।

सेडेड के ढ़ांचे में 'पारिस्थितिकीय लोकतंत्र' (ईडी) का मुद्दा, मुख्य है। इसमें जीवन के सभी आयाम और स्वंय लोकतंत्र भी संबद्द है इसलिए कोई भी मुद्दा किसी अन्य मुद्दे की अगुवाई करता हुआ दिखता है। इसलिए आज के समय में हमारे लिये पारिस्थितिकीय लोकतंत्र महत्वपूर्ण है लेकिन अभी तक इस पर्याप्त मान्यता नहीं मिली, सेडेड 'पारिस्थितिकीय लोकतंत्र' के माध्यम से व्यापक लोकतंत्र की परिकल्पना को मजबूती देता है। 'पारिस्थितिकीय लोकतंत्र' की धारणा मानव तथा प्रकृति के बीच एक लोकतांत्रिक संबंध स्थापित करती है उसके साथ–साथ ये एक मनुष्यों तथा देशों के बीच में में भी प्राकृतिक संसाधनों के एकसमान विभाजन की बात करता है। हम एक–दूसरे से ईडी (इकोलॉजिकल डिमोक्रेसी) के साथ ***'पारिस्थितिकीय स्वराज'*** की बात करते हैं, लेकिन वास्तव में हम उसे एक गहरी अवधारणा जैसे कि समुद्र के गहरे केन्द्र में जीवन का विश्वास कायम करने वाले एक प्रतीक के रूप में देखते हैं, जो संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में फैलाने तथा जीवन के सभी आयामों में सहजीवी और आपस में जुड़े संबधों के रूप में देखता है।

## सेडेड का कार्यक्षेत्र :

पारिस्थितिकीय लोकतंत्र में अभिव्यक्ति के उन तरीकों का प्रयोग किया जाए जिनसे आज के दौर में ऐसे विश्व की कल्पना की जा सके जिसमें भारत, दक्षिण एशिया तथा विश्व के अन्य देशों के सभी वर्गों के लोग अपनी इच्छा से रह सकें। यह तभी संभव हो सकेगा जब जीवन के सभी आयामों को अभिव्यक्त करते लोकतंत्र की एक व्याप्क समझ कायम हो सके।

## सेडेड का परिप्रेक्ष्य (योजना) :

जीवन के सभी पहलुओं के साथ 'लोकतंत्र' की रूपरेखा में पारिस्थितिकीय मुद्दों की सैद्धांतिक अभिव्यक्ति का जुड़ाव (लिंकेज) होना चाहिए।

ये जुड़ाव ऐसा होना चाहिए कि जितना संभव हो सके वो समाज के भिन्न वर्गों में इस विचार को पहुंचा सके, तथा उसके आधार पर दिन–प्रतिदिन की क्रियाएं संपन्न की जा सकें। तीसरा, जोड़बंदी, राजनैतिक रूप से अर्थपूर्ण तभी होगी जब लोग उसे समझ पाएंगे तथा मुख्यधारा की राजनीति में शामिल हो पाएंगे, जहां इस मुद्दों पर विचार–विमर्श हो पाए। जो लोग इस बात को समझते हैं तथा तथा जो मुख्य धारा की राजनीति में शमिल होते हैं, और इन मुद्दों पर विचार–विमर्श के रूप में भागीदारी करते हैं तो ऐसे में अभिव्यक्ति राजनैतिक रूप से सार्थक हो सकती है। चौथा, लोगों की भिन्न जीवन शैली की ठोस वास्तविकताओं पर आधारित विचारों को व्यक्त करना पड़ेगा। पांचवा यदि हम अपने विचारों या आइडिया को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना चाहें तो उन्हें– सैद्धांतिक रूप से, वैचारिक लेखन द्वारा तथा विचार–विमर्श से विचारों के हर छोटे पहलू की ठोस अभिव्यक्ति की जाए – जैसे कि

आर्थिक क्रियाओं के रूप में, सामाजिक रिश्तों, सगंठनात्मक ढांचे तथा प्रक्रिया तथा राजनैतिक अभियानों में साझा अर्थ आदि को पूरी तरह से स्पष्ट करने वाले सांस्कृतिक रूपों में स्पष्ट कर पाए।

## सेडेड के लक्ष्य :

सेडेड निम्न उद्देश्यों के लिए पारिस्थितिकीय लोकतंत्रिक दृष्टिकोण पर रणनीति, कथ्यपरक, सैद्धांतिक, प्रशासनिक तथा व्यवहारिक नमूने तैयार करता है :

- जीवन के भिन्न क्षेत्रों में पारिस्थितिकीय लोकतंत्र की आवश्यकता को समझाने के लिए सार्वजनिक रूप से वाद–विवाद करने के लिए इस तरह के मंच उपलब्ध करवाना जैसे कि वो जिन्दगी के व्यापक लोकतंत्र के लिए आवश्यक भाग हो।
- यह दिखाना कि लोकतांत्रिक आग्रह को मजबूत बनाने वाली पारिस्थितिकीय चिंताएं तथा अन्य आयाम सामान्य रूप से एक–दूसरे को कैसे मजबूत करते हैं तथा व्याप्क स्तर पर भिन्न महत्वपूर्ण मुद्दे आपस में कैसे जुड़े होते हैं।
- पारिस्थितिकीय लोकतंत्र के संबंध में स्थानीय समुदायों/जनआंदोलनों मीडिया तथा जमीनी स्तर पर काम करने वालों को एक ही मंच पर लाना और उनके स्थानीय मुद्दों को भिन्न देशी तथा वैश्विक मंचों जैसे विश्व सामाजिक मंच, यूरो एश्याई मंच (यूरो एशियन फोरम), अफ्रीका–एश्या संवाद (अफरीकन–एशियन डॉयलॉग) तथा इंडियन सोशल फोरम (वर्ल्ड सोशल फोरम) के माध्यम से एक साझा मंच देना।

## सेडेड के उद्देश्य :

1. विभिन्न माध्यमों से पारिस्थितिकीय संवाद के विचार को जितना संभव हो सके व्यक्त करना, प्रत्येक की शक्ति तथा सीमाओं को समझना; एक दूसरे के माध्यम से सफल संवाद कायम करने के रास्ते में आने वाली बाधाओं तथा धमकियों को समझना तथा भविष्य में होने वाले कामों की तैयारी करना।

2. पारिस्थितिकीय लोकतंत्र की समझ को बढ़ाना तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से ठोस मुद्दों के माध्यम से उसे अम्ल में लाना।

3. मजबूत बनाना/ संसाधनों का सृजन करना (ज्ञान, वचनबद्ध लोगों, साहित्य, सांस्कृतिक गतिविधियों, नेटवर्क आदि) ताकि उनके माध्यम से पारिस्थितिकीय लोकतंत्र कायम करने के प्रयास जारी रखे जा सकें।

# सेडेड की क्रियाविधि :

सेडेड न तो एक औपचारिक इकाई है और न ही कोई बंद घेरा ही है। सेडेड – जो कि विभिन्न गतिविधियों, संगठनों तथा जन आंदोलनों से जुड़ा है तथा ये हमेशा ही नये संगठनों तथा नई पहल करने वाले साथियों से जुड़ने का प्रयास करता है; ये पारिस्थितिकीय स्वराज तथा स्थिरता (सस्टनेबलिटी) के संबंध में एक ज्ञान चक्र है। सेडेड कई घटकों तथा संगठनों के साथ जुड़कर उनको सहयोग देता है।

सेडेड अपने आप में एक अंतहीन तालिका है जो कि संपूर्ण बौद्धिक राजनैतिक परियोजनाओं को पारिस्थितिकीय लोकतंत्र के संवाद की प्रक्रिया की ओर ले जाता है। यदि हम संदर्भों की बुनियादी बातों के आधार पर चलने वाली सेडेड की कार्य प्रणाली को समझ जाएं तो हम हस्तक्षेप के रूप का औचित्य स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।

दक्षिण एशिया की वास्तविकता न केवल जटिल, विविध और बहुस्तरतीय है बल्कि ये तेजी से बदलती भी रहती है। भिन्न स्तरों पर भिन्न घटक एकसमान शब्दों का भिन्न अर्थों में प्रयोग करते हैं। यहां तक कि 'दक्षिण एशिया' भी, जैसे कि भारत में समाजवाद का गहरा प्रभाव है तथा लोगों में गैर मार्क्सवादी विचारों जैसे कि गांधी और अंबेडकर का समावेश। विश्व के अन्य देशों में गांधी को समाजवादी विचारों के अभिन्न अंग के रूप में नहीं माना जाता है। यह विडंबना ही है कि भारत में कार्यकर्ता लोग गांधी तथा माओ दोनों के अतिवादी विचारों से प्रभावित होते हैं तथा प्राकृतिक संसाधनों तथा न्याय दोनों ही मुद्दों पर संघर्ष का अंत करते हैं। उदारवाद की वैचारिक परिस्थितियों, मार्क्सवादी, गांधीवादी तथा अंबेडकरवादी विचारों की बजाय सामान्य परिस्थितियों से बाहर सहयोग और गठजोड़ बनाए जाते हैं, उत्पीड़न तथा जमीनी स्तर पर संघर्ष से आकस्मिक व्यय होता है।

सेडेड को महसूस होता है कि यदि न्याय तथा स्थिरता के मुद्दे, आमतौर से कायम बौद्धिक विभाजनों से स्वंय ही किनारा कर लें और हस्तक्षेप का काम न करें तो स्थिरता के दृष्टिकोण का पता लगाना आसान नहीं होगा। पारिस्थितिकीय लोकतंत्र के दृष्टिकोण को उभारने के मूल योगदान के रूप में पारिस्थितिकीय तथा लोकतंत्र के भिन्न आयामों को भागीदारी के रूप में समझना बहुत आवश्यक है।

सेडेड समझता है और वो वर्तमान पारिस्थितिकीय संकट को कम करने के लिए प्रभावकारी प्रतिक्रिया तथा अर्थपूर्ण योगदान की बात करता है जो तत्काल तथा व्यापक प्रतिक्रियाओं की मांग करता है। आज के दक्षिण एशिया सहित वैश्विक दक्षिण के पारिस्थितिकीय परिदृश्य में वृद्धि आधारित मॉडल पर बढ़ता हुआ जोर, स्वच्छ पानी की बढ़ती हुई अपव्ययता, प्राकृतिक जल चक्र का बिगड़ना, तेल की कीमतों का बढ़ना, खनिज पदार्थों के भिन्न हित धारकों के

बीच बढ़ते वाद–विवाद, पानी, जीवाश्म ईंधन, कोयला, अन्तर्देशीय, समुद्रीय मत्स्य पालन तथा बढ़ती लवण्ता तथा मिट्टी का निम्नीकरण, उद्योग तथा दक्षिण के शहरों में अन्य प्रदूषक तत्व, बढ़ता हुआ स्टील सीमेंट तथा बिजली पर आधारित "आधुनिकीकरण" तथा "शहरीकरण" आदि बहुत से कारक तथा तत्व मौजूद हैं।

एक बड़ी त्रासदी है कि इस संकट के संबंध में संपूर्ण दक्षिण एशिया में राजनैतिक प्रतिक्रिया की कमी है। उप धाराएं तथा व्यक्तिगत लोग इन मुद्दो को संगठित फैशन के रूप में उठाते हैं, वहीं प्रांतीय, राष्ट्रीय राजनीति में इस विषयों को गैर जरूरी समझा जाता है।

व्यापक पारिस्थितिक संकट से एकीकृत पारिस्थितिक–राजनैतिक प्रतिक्रिया को विकसित करने, विभिन्न एकमुद्दीय आंदोलनों के आपसी जोड़ को समाप्त करने के लिए थोड़ा प्रयास करने की आवश्यकता है। इसके लिए सबसे पहले इन विभिन्न सामाजिक आंदोलनों की राजनैतिक तथा वैचारिक मूल्य तथा प्रभुत्व को पहचानने की आवश्यकता है।

इसलिए जब इस विषय को एक ध्यान से समझा जाता है और इसके अंतर समझ में आते हैं तब बुनियादी बिंदुओं से आधारभूत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है तथा प्रगति के क्षेत्रों के विस्तार तथा संगठनात्मक दृष्टिकोणों तथा उनकी समानताओं पर जोर दिया जाता है। इस प्रकार विकास के लिए नागरिक समाज के प्रयास एक सुसंगत वैकल्पिक दृश्य पेश करते हैं जो पारिस्थितिकीय दृष्टि से भी ठीक है, संभव है तथा चिरस्थायी है।

यद्यपि अनेक गैर सरकारी संस्थान तथा सामाजिक आंदोलन दोनों ही इन मुद्दों को उठाते हैं, और उनमें से अधिकतर दल किसी एक खास मुद्दे पर काम करते हैं और उसका हल तलाशते हैं। जबकि पारिस्थितिकीय संकट बहुआयामी है, इसका हल टुकड़ों में काम करने नहीं निकाला जा सकता है बल्कि इसे एक व्यापक साझा विचार चाहिए जिस पर पारिस्थितिकीय संकट तथा भिन्न हितकारी आपस में इस तरह से जुड़े हों ताकि विकास के मॉडल का एक वैकल्पिक विचार एक स्पष्ट विकल्प बन जाए।

# सेडेड के विषयगत क्षेत्र :

पिछले कुछ वर्षों से सेडेड ने अपने कार्यक्षेत्र में कुछ विषयगत क्षेत्रों को शामिल किया है, जैसे कि स्थानीय और वैश्विक स्तर पर सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक लोकतांत्रिक रूप में पारिस्थितिकीय जुड़े विषय जैसे कि :

- चिरस्थायी कृषि (सस्टनेबल एग्रीकल्चर); किसान स्वराज अभियान (फारमर्स स्वराज कम्पैन)

- जल–नदी–बाढ़ प्रबंधन (वाटर–रिवर–फल्ड मेनेजमेंट)
- पारिस्थितिकीय, गरिमा तथा हाशिये पर रहने वाले लोग (इकोलॉजी, डिग्निटी एंड मारजिन्लाइज्ड मेजोरिटी)
- कोई भूखा न सोये संवाद (लैट नो वन स्लीप हंगरी)
- हिमालय स्वराज अभियान (सेव द हिमालय कम्पैन)
- विश्व स्तर पर आदिवासियों की जीवन रक्षा (आदिवासी सरवाइवल ग्लोबली)
- अन्तर्महाद्वीपीय संवाद (इंटर–कॉनटिनेन्टल संवाद)

# सेडेड के सिद्धांत तथा प्रक्रियाएं :

सेडेड भिन्न विषयों से संबंधित अनेक प्रकार से संवाद आयोजित करता है – कई वर्गों के बीच में विविध तरह से बातचीत करना; औपचारिक बैठकों द्वारा, स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यशाला तथा सम्मेलन करना; इसके साथ ही जीवनशाला (विद्यालय) तथा बच्चों तथा किशोरों की उपचारात्मक कक्षाएं करवाना, पदयात्रा तथा फील्ड में शोध करने के साथ–साथ संवाद के भिन्न माध्यम उपलब्ध करवाना।

सेडेड की प्रक्रिया में संवाद के इन माध्यमों को एक उत्पादक सामग्री के रूप में देखा जाता है जो भिन्न सामाजिक क्षेत्रों तथा संदर्भों में 'अर्थ के प्रवाह' को सशक्त बनाता है जैसे कि :

पारिस्थितिकीय लोकतंत्र को कुछ विशिष्ट संदर्भों में समझने के लिए वंचितों तबकों के लिए होने वाले अभियान के कामों को करना; पारिस्थितिकीय लोकतंत्र के विचार को विकसित करने के लिए भिन्न संवादों को आयोजित करना तथा इसे यर्थातवादी रूप से मजबूत बनाने के प्रयास करना; कई दलों जैसे आदिवासी दलों के साथ मिलकर पारिस्थितिकीय जीवनशैली को पहचानकर उसे मजबूत करना।

ऊपर वर्णित सभी प्रक्रियाओं में निम्न सिद्धांत अपनाए जाते हैं :

- स्वैच्छिक भागीदारी को बढ़ावा देना तथा उसके माध्यम से पारिस्थितिकीय लोकतंत्र को आगे बढ़ाने का काम किया जाता है।
- पारिस्थितिकीय विश्वदृष्टि रखने (आमतौर से कम विकसित क्षेत्रों तथा वंचित वर्गों में) वाले अधिक से अधिक लोगों को सेडेड में भागीदारी निभाने के लिए प्रोत्साहित करना, वो लोग साधारणतः जिन संसाधनों का प्रयोग करते हैं या उनके कौशल की जानकारी को बेहतर रूप से अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना तथा उन्हें नेतृत्व की भूमिका के रूप में आगे बढ़ाने का काम करना।

- सैद्धांतिक तथा जमीन से जुड़े मुद्दों तथा बहसों को आपस में जोड़ना।
- सहयोगी गतिविधियों में शामिल रहना, वर्तमान में चल रही गतिविधियों का समर्थन करना और बढ़ावा देना तथा मौजूदा ऊर्जा तथा संसाधनों को पारिस्थितिकीय लोकतंत्र के कामों में प्रयोग करना।
- सेडेड की स्वंय की पहचान बनाये बिना ही नेटवर्क को विकसित करना तथा उसे मजबूत बनाना।
- संगठात्मक रूप से प्रचार करने तथा प्रसिद्ध की चाहत के बिना ही पारिस्थितिकीय लोकतंत्र के मुद्दों तथा विचारों को प्राथमिकता देते हुए प्रोतसाहित करना।

संवाद कार्यक्रमों का अयोजन करने उसमें हिस्सा लेने के अलावा पारिस्थितिकीय स्वराज की अवधारणा को प्रोत्साहित करना और उसे मजबूत करना जैसी कि औपचारिक गतिविधियां करने के अलावा 'सेडेड' पारिस्थितिकीय लोकतंत्र के विचार को प्रोत्साहित करने के लिए निम्न गतिविधियों में शामिल रहता है :

1. वर्तमान में मौजूद पारिस्थितिकीय संवाद जैसे विषयों पर काम करने वाले नेटवर्कों में भाग लेना तथा नए नेटवर्क बनाना ;

2. भारत के पड़ोसी दक्षिण एशियाई देशों तथा अन्तर्राष्ट्रीय मंचों में भी पारिस्थितिकीय संवाद के काम को मजबूती प्रदान करना;

3. ई–जनरल (ई–पत्रिका) तथा ग्रीन फीचर के माध्यम से जलवायु संकट तथा पारिस्थितिकीय लोकतंत्र जैसे विषयों पर सूचना का प्रसार करना।

4. पारिस्थितिकीय लोकतंत्र जैसे विषयों पर काम करने वाले शोधकर्ताओं, विद्वानों तथा कार्यकर्ताओं के लिए दस्तावेजों का संग्रह करना, समाचार पत्रों से महत्वपूर्ण समाचारों की कतरनें जमा करना, इसके अलावा उन लोगों को पुस्तकों के संग्रह के साथ–साथ कार्य स्थल भी प्रदान करने जैसे कार्यों द्वारा सेडेड संसाधन केन्द्र (रिसोर्स सेंटर) को उन्नत बनाना।

---

**–हिन्दी अनुवाद : विजय लक्ष्मी ढ़ौंडियाल**